International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(I), October - December, 2022, pp. 91-96

राजस्थान मे समाचार पत्रों के विकास का इतिहास

संगीता नागरवाल*

प्रस्तावना

समाचार पत्र जो इतिहास के प्रमाणिक दस्तावेज है इनकी देश के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है बिना समाचार पत्रों के अध्ययन के हम तत्कालीन देश व समाज के इतिहास को नहीं समझ सकते। समाचार पत्र हमेशा से देश के इतिहास से अविच्छिन्न रूप से सम्बद्ध रहे हैं। इन समाचार पत्रों ने राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक विचारधारा को गहराई से प्रभावित कर एक विशेष दिशा में प्रावहमान करते हुये धर्म, शिक्षा, कला, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों को जनता के सामने रखा, राष्ट्र की आशाओं और आकांक्षा को वाणी देने का कार्य किया। जागरण प्रक्रिया को धरा से ऊँचा उठाकर शिखर तक पहुचाने का पूर्ण प्रयास किया, जन–जन को राजनीति की दिशा दिखाई, राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रत्येक चरण, प्रत्येक पहलु एवं राजनैतिक गतिविधियों को प्रमुखता से प्रकाशित किया, राष्ट्रीय आन्दोलन को लोकतांत्रिक संस्थाओं से अवगत कराने, सरकार की नीतियों की समीक्षा कर जनता को प्रभावित करने, जनमत के निर्माण तथा विभिन्न दलो के विचारो से भारतीयों को परिचित कराने, देश के विभिन्न भागों में सामाजिक वर्गो के मध्य एक मानसिक सबंध स्थापित करने, राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों को सफल बनाने में समचार पत्रो की महत्तवपूर्ण भूमिका रही है।

समाज के इस महत्वपूर्ण अंग का प्रारम्भ बिना मुद्रण कला के सम्भव नहीं था। किसी भी पुस्तक, समाचार पत्र व अन्य सामग्री के लिए भारत में मुद्रणालय का होना आवश्यक था। विश्व के अन्य देशों में इस महत्वपूर्ण अंग की महत्ता साबित हो चुकी थी। इस कारण अब ब्रिटिश भारत में भी समाचार पत्रों की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। हालाकी भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आगामन से पहले प्रेस की स्थापना हो चुकी थी। भारत में प्रेस स्थापित करने का श्रेय पुर्तगाली मिशनरियों को जाता है। पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों ने 1550 में यूरोप से मुद्रणालय (प्रेस) का आयात किया और 6 सितम्बर 1556 में जर्मन पादरी जेगेन बाल्क ने गोवा में प्रिटिंग प्रेस स्थापित किया। धीरे धीरे भारत के प्रत्येक कोने–कोने में प्रेस स्थापित किये जाने लगे। भारत में प्रेस द्वारा हिन्दी में प्रकाशित प्रथम पुस्तक कालीदास की अभिज्ञान शकुन्तलम थी। लेकिन भारत का प्रथम सामचार पत्र जेम्स ऑगस्टन हिक्की द्वारा प्रकाशित बंगाल गजट (कलकत्ता एडवरटाइजर) 1780 था लेकिन भारत का प्रथम हिन्दी समाचार पत्र जुगलकिशोर का उदन्त मार्तण्ड (1826) था वही भारत का प्रथम दैनिक समाचार पत्र सुधा वर्षण (1854) था। इन समाचार पत्रों से प्रेरणा प्राप्त कर देश के अन्य क्षेत्रो यथा बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश इत्यादि से भी समाचार पत्रो का प्रकाशन होने लगा। विभिन्न प्रतिबंधो के चलते भारत में समाचार पत्रों का प्रकाशन आधी शताब्दी के ऐतिहासिक दौर से गुजर चुका था। लेकिन राजस्थान की बात करे तो राजस्थान अभी भी समाचार पत्रों के प्रकाशन के मामले में निष्क्रिय था। जब ब्रिटिश भारत के अन्य प्रदेशों में समाचार पत्र अपनी जडे जमा चुके थे और लगभग 700 से अधिक समाचार पत्र–पत्रिकाओं के सम्पादक अंग्रेजी सत्ता से प्रेस की स्वाधीनता के लिये संघर्ष कर रहे थे। उस समय तक राजस्थान में किसी मुद्राणालय के दर्शन भी दुर्लभ थे। इसके लिए राजस्थान का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिदृश्य जिम्मेदार था। राजस्थान की जनता तिहरी गुलामी से त्रस्त थी ब्रिटिश सरकार, देशी शासक, जमींदार/जागीरदार इत्यादि अतः ब्रिटिश भारत की तुलना में राजस्थान की जनता अधिक शोषण से पीडित थी। यहॉ पर ब्रिटिश सरकार,

* सह आचार्य–इतिहास, स्व. राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाँदीकुई, दौसा, राजस्थान।

देशी नरेशों जमींदार/जागीरदारों के प्रतिबंध अधिक थे। लिखने, बोलने की स्वतंत्रता देशी रियासतों में नहीं के बराबर थी। रियासतों के इस समूह (राजस्थान) में निरंकुश सत्ता कायम थी। शासको के आदेश ही कानून थे। सामाजिक ढॉचा परम्परागत तथा आर्थिक जीवन अस्त व्यस्त था। यहॉ की अधिकांश जनता कृषक और अशिक्षित थी। संचार साधनों का नितांत अभाव था कुशासन, भ्रष्टाचार, अराजकता इन क्षेत्रों में प्रचलित थी। नागरिक अधिकारों एवं प्रतिनिधि संस्थाओं का पूरा अभाव था। यहॉ समाचार पत्र पढना, अन्य क्षेत्रो से निकलने वाले समाचार पत्रों को समाचार भेजना भी राजद्रोह माना जाता था ऐसी स्थिति में समाचार पत्रों का प्रकाशन चॉद को छूॅने के समान दुष्कर कार्य था। समाचार पत्रो को प्रशासन की ओर से इजाजत मिलने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नही होता लेकिन ब्रिटिश भारत से निकलने वाले समाचार पत्रों की वीरोचित भूमिका का प्रभाव देशी रियासतों पर भी पडा। यद्यपि यहॉ के पत्रकार कार्यकर्ता को समाचार पत्र प्रकाशित करने की अनुमति प्राप्त नही होती थी तो वे विभिन्न जोखिम उठाते हुये अपने संवाद बाहर के पत्रों यथा सैनिक 'प्रताप' इत्यादि को भेजने लगे। इन पत्रों ने राजस्थान की रियासती जनता के अभाव अभियोग को वाणी दी। राजस्थान की जनता के शोषण व अत्याचार की कहानी इन समाचार पत्रों मे निरन्तर प्रकाशित होने लगी।

समाचार पत्रों के महत्व व आवश्यकता को अब देशी नरेश भी समझने लग गये थे। अब नरेशों ने राजाज्ञाओं एवं सूचनाओं, गतिविधियों को आम जनता तक आसानी से पहुचाने के लिये राजपत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ किया। जिनमें राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के समाचार भी प्रकाशित किये जाने लगे हांलाकि इन पत्रों मे स्वतंत्र लेखन का पूर्ण अभाव था लेकिन इन्होने आगामी समाचार पत्रों के लिये एक आधारशिला तैयार कर दी थी। 1900 तक के राजपूताना के लगभग सभी समाचार पत्र मुख्यतः सकारी सूचना प्रधान, राज्याश्रित, आर्यसमाजी विचारधारा से प्रेरित सुधारवादी पत्र थे क्योंकि इस समय तक देशी शासको ने समाचार पत्रों को राजनीतिक मुद्दों पर विचार विमर्श की इजाजत नही दी थी। माना जाता है कि राजस्थान मे पत्रकारिता का प्रारम्भ मजहरूर सरूर से हुआ जिसका प्रकाशन मेवात से हुआ था। यह पत्र हिन्दू और उर्दू मे प्रकाशित होता था। इसका उल्लेख फ्रेंच लेखक गार्सा द तासी ने अपने 'डिस्कोर्सेज' मे किया है लेकिन इस समय इसकी कोई प्रति उपलब्ध नहीं है। यह पत्र मासिक था यह पत्र 1849 में भरतपुर महाराणा बलवन्त सिंह के संरक्षण में प्रकाशित होने लगा था। जो कि सरकारी गजट मात्र था। 1864 में ईसाई मिशनरियों ने ब्यावर में लिथो प्रेस की स्थापना की।

1856 में हैडमास्टर कन्हैयालाल के सम्पादन में उर्दू भाषा में जयपुर से साप्ताहिक रोजलतामिल तालिम/राजपूताना अखबार का प्रकाशन हुआ। इसी के हिन्दी संस्करण का नाम राजस्थान अखबार रखा गया था। कागज के स्थान पर लीथो कपडे पर प्रकाशित होता था।

1866 मे जोधपुर से मारवाड गजट, 1878 में अर्द्धसाप्ताहिक जयपुर गजट जयपुर से, 1868 में मेवाड से उदयपुर गजट का प्रकाशन हुआ। इस अवधि में भारत भूमि पर महर्षि दयानन्द का पदार्पण हुआ उन्होने स्वभाषा, स्वदेशी, स्वराज्य तथा वेदों की ओर लौटो का नारा दिया। 1857 में प्रकाशित इनकी पुस्तक सत्यार्थप्रकाश ने राजस्थान में एक भूचाल मचा दिया। इन्होने समस्त देश को प्राचीन भारत के गौरव का स्मरण कराने के साथ ही जनमानस में चेतना की एक किरण फैलायी। इन्होने सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवन को झकझोर दिया। इन्ही से प्रभावित होकर उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह ने विशुद्ध हिन्दी का प्रथम साप्ताहिक (सोमवार) सज्ज्न कीर्ति सुधाकर का 1879 में प्रकाशन प्रारम्भ किया। जो 1956 तक प्रकाशित होता रहा। 1881 में नाथद्वारा से पंडित मोहनलाल विष्णुलाल पाण्डेय ने हरिश्चन्द्र चन्द्रिका एवं मोहन चन्द्रिका का प्रकाशन शुरू किया। सद्धर्भ स्मारक का प्रकाशन 1883 में वल्लभ कुल सम्प्रदाय ने मासिक पत्र के रूप में किया। जगलाभ चिन्तक व खैरख्वाह खलक की प्राप्त प्रति के अनुसार इसका प्रकाशन साप्ताहिक के रूप में 1861 से शिवनारायण द्वारा किया गया। इसे हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र भी माना जाता है। इसी के उर्दू संस्करण का प्रकाशन अयोध्या प्रसाद द्वारा किया जाता था।

1882 में अजमेर से मासिक देश हितैषी का प्रकाशन मुन्नालाल शर्मा ने किया। 1885 में यहीं से हिन्दी उर्दू का मिला जुला साप्ताहिक राजपूताना गजट का प्रकाशन मौलवी मुराद अली बीमार द्वारा किया गया। 1885 में ही मुंशी समर्थदान ने साप्ताहिक के रूप में राजस्थान समाचार पत्र प्रकाशित किया जो 1904–05 में दैनिक हो

गया। 1885–86 में अजमेर से ही राजपूताना मालवा टाइम्स/राजस्थान पत्रिका का प्रकाशन लक्ष्मण दास ने किया। मालवा टाइम्स अंग्रेजी के संस्करण का हिन्दी संस्करण था। राजस्थान पत्रिका जो साप्ताहिक पत्र था। 1897 में बैरिस्टर गौरीशंकर भार्गव ने अजमेर से भार्गव पत्रिका का प्रकाशन किया। 1890 में राम प्रताप शर्मा ने बूँदी से सर्वहित का प्रकाशन किया और भी कई समाचार पत्र इस समय प्रकाशित हो रहे थे। यद्यपि इन समाचार पत्रों में राजनीतिक विषय नही के बराबर थे लेकिन इन समाचार पत्रों ने जनमानस में उस चेतना के बीज बोये जिसने आगे अंकुरित होकर प्रादेशिक राजाओं से अभिव्यक्ति की स्वाधीनता अर्जित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हरिश्चन्द्र चन्द्रिका व मोहन चन्द्रिका ने देशी रियासतों में प्रेस की स्वतंत्रमा का पुरजोर समर्थन करते हुये ब्रिटिश भारत व देशी रियासतों के समाचार प्रकाशित किये। देश हितैषी ने स्वदेश के कल्याण पर बल दिया। इसने आर्य समाज के संदेश स्वभाषा, स्वधर्म, स्वराज्य, स्वदेशी के विचारों को जन–जन तक फैलाया और जन साधारण में राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत की। राजपूताना गजट का तो उद्देश्य ही रियासती अत्याचारों को मुक्त भाव से प्रकाशित करना था। अपनी बेधडक लेखनी के कारण मुराद अली को जेल की यात्रा करनी पडी फिर भी वे शायकीय दमन के खिलाफ लिखते रहे। राजस्थान पत्रिका का उद्देश्य भी राजपूताना मे घटने वाली घटनाओं की और लोगों का ध्यान आकर्षित करना था। इसने राजनीतिक एजेंटों के कार्यो व रियासतों के कुशासन के विरूद्ध आवाज उठाई। यानि की इन पत्रों ने शासको और जनता को ये तो आभास करा दिया की वे जिस ब्रिटिश सत्ता मे जी रहे है वह सर्वथा व्याप्त और अवांछनिय है। और इस स्थिति से जितनी जल्दी मुक्ति मिले उनके लिये उतना ही श्रेयस्कर है। इन समाचार पत्रों ने सीमित क्षेत्र में ही सही अपनी निर्भिक नीति द्वारा जन कल्याण के प्रयत्न किये, साहित्य को संवारा, संस्कृति व सभ्यता के गौरव का भान कराते हुये सांस्कृतिक विरासत को पुर्नजीवित किया, इन्ही समाचार पत्रों की नींव पर 1900 के बाद भी राजनैतिक पत्र कारिता का बीज फलाफूला।

1900 के बाद ब्रिटिश भारत में घटने वाली राजनैतिक घटनाओं यथा 1885 में कांग्रेस की स्थपना, 1905 का बंग–भंग, स्वदेशी आन्दोलन का प्रभाव राजस्थान पर भी पडा। यहॉ भी इन घटनाओं के प्रतिक्रिया हुई। यहॉ कुछ ऐसे स्वतंत्रता प्रेमी हुये जिन्होने संघर्ष का बिडा अपने हाथ में लिया जैसे कि केसरीसिह बारहठ, जोरावर सिंह, विजय सिंह पथिक, गोपाल सिंह खरवा, अर्जुन लाल सेठी, प्रतापसिंह इत्यादि।

विभिन्न प्रतिबंधो व शोषण / अत्याचारों के खिलाफ आन्दोलन छेड दिया और इस आन्दोलन से जनसामान्य को जोडने, जनजागरण को संदेश देने, भारत में चल रहे जन आन्दोलन का समर्थन देने, शासको की रीति नीति की आलोचना करने, रियासतों के पिछडेपन का विरोध करने, समाज में प्रचलित समाजिक बुराईयों के विरोध के लिये राजस्थान में भी लोकचेतना जागृत करने वाली मिशनरी पत्रकारिता का प्रारम्भ किया गया। राजस्थान के कोने कोने से प्रकाशित होने वाले 1900 के बाद के प्रमुख समाचार पत्र कुछ इस प्रकार थे–

क्र. स.	समाचार पत्र	सन्	सम्पादक	विशेष	प्रकाशक स्थल
1.	समालोचक	1902–06	जवाहर लाल जैन वैध	वार्षिक	जयपुर
2.	सौरभ	1920	रामनिवास शर्मा	मासिक	जयपुर
3.	प्रभात	1930	लाडली प्रसाद गोयल	1939 मे दैनिक	जयपुर
4.	जयपुर समाचार	1935–36	प्रियतम जी/ कमलाकार कमल	वार्षिक	जयपुर
5.	देश हितेषी	1940	दयाशंकर पाठक	मसिक	जयपुर
6.	जयभूमि	1940	गुलाब चन्द काला	पाक्षिक	जयपुर
7.	प्रचार	1942	कामदार / प्रियतम जी	पाक्षिक	जयपुर
8.	लोकवाणी	1943	लाडली नारायण / सूर्यनारायण चतुर्वेदी	साप्ताहिक 1946 से दैनिक	जयपुर
9.	क्लेवा दैनिक	1946	परमेण्डी दास, प्रवीण चन्द, अनुपम जैन	मासिक	जयपुर
10.	जागृत	1947	करतार सिंह नारंग	दैनिक	जयपुर
11.	खादी पत्रिका	1947	गुलाब चन्द काला	दैनिक	जयपुर

12.	सचित्र मारवाडी	1938		साप्ताहिक	जयपुर
13.	प्रजा सेवक	1940	अचलेश्वर प्रसाद शर्मा	साप्ताहिक	मारवाड
14.	राजपूताना	1947	मदनगोपाल काबरा	साप्ताहिक	मारवाड
15.	लोकमत	1947	विरधीचन्द अग्रवाल	साप्ताहिक	मारवाड
16.	लोकसेवक	1942	अबीनान हरि	साप्ताहिक	हाडौती
17.	किसान संदेश	1946	शिवदयाल राजावत	साप्ताहिक	हाडौती
18.	दीनबंधु	1944	राजेन्द्र कुमार अजेय/श्री नाथूलाल वीर	साप्ताहिक	हाडौती
19	बूंदी गजट	1929	बूंदी सरकार	साप्ताहिक	हाडौती
20.	भरतपुर गजट	1914	भरतपुर सरकार	साप्ताहिक	हाडौती
21.	भारतवीर	1926	बृजदयाल शर्मा	साप्ताहिक	भरतपुर
22.	नवयुग संदेश	1944–45	सावलप्रसाद चतुर्वेदी	साप्ताहिक	भरतपुर
23.	तेज प्रताप	1936	कान्तिचन्द्र जोशी	साप्ताहिक	अलवर
24.	अलवर पत्रिका	1943–66	कुजंबिहारी लाल मोदी	साप्ताहिक	अलवर
25.	राजस्थान क्षितिज	1945	जैमिनी कोशिक	मासिक	अलवर
26.	स्वतंत्र भारत	1947	मास्टर भोलानाथ	साप्ताहिक	अलवर
27.	नवजीवन	1939	कनक मधुकर	मासिक	अजमेर
28.	बालहित	1935–36	कृष्णानन्द/डॉ कालू लाल श्रीमाली	साप्ताहिक	उदयपुर
29.	राजस्थान केसरी	1920	विजय सिंह पथिक	साप्ताहिक	वर्धा
30.	नवीन राजस्थान	1922	किशोर सिंह	साप्ताहिक	अजमेर
31.	राजस्थान	1923	विजयसिंह पथिक	साप्ताहिक	अजमेर
32.	त्यागभूमि	1927	हरिभाऊ उपाघ्याय/ क्षेमानन्द	साप्ताहिक	अजमेर
33.	दरबार	1927	मदनमोहन लाल गुप्त	साप्ताहिक	अजमेर
34.	मीरा	1927	जगदीश प्रसाद माथुर	मासिक	अजमेर
35.	नवज्योति	1936	रामनारायण चौधरी	साप्ताहिक	अजमेर
36.	नया राजस्थान	1946	रामनारायण चौधरी	दैनिक	अजमेर

इन प्रमुख समाचार पत्रों के अलावा और भी समाचार पत्र राजस्थान की रियासतों से प्रकाशित हो रहे थे। इन सभी समाचार पत्रों में तत्कालीन घटनाओं, शोषण, अत्याचार/दमन को निर्भिक व निष्पक्ष भाव से जनता के सामने रखा। इन समाचार पत्रों मे आन्दोलन की प्रत्येक घटना जैसे की किसान आन्दोलन (बिजौलिया आन्दोलन, नीमूचणा हत्याकाण्ड) प्रजामण्डल आन्दोलन को प्रकशित करने के साथ–साथ देशी शासको व ब्रिटिश शासको द्वारा किये जा रहे अत्याचारों की भी पोल खोल कर रख दी। जिसके कारण सरकार ने इन समाचार पत्रो पर कठोर प्रतिबंध लगा दिया गया जैसे कि राजस्थान, नवीन राजस्थान, नवज्योति इत्यादि पत्रों को अपनी निर्भिक वाणी के लिये अनेक आर्थिक संकटो का सामना करना पड़ा। अनेक पत्र तो सरकारी दमन व आर्थिक संकट के कारण बहुत ही अल्पजीवी रहे जैसे कि राजस्थान केसरी, राजस्थान, नवीन राजस्थान इत्यादि। किन्तु इसके बावजूद इन समाचार पत्रों ने अपनी वीरोचित भूमिका को एक के बाद एक दूसरे ने ठीक उसी तरह से निभाया जिस प्रकार युद्ध में एक सेनानायक के वीर गति प्राप्त होने के बाद दूसरा सेना की कमान संभाल लेता है। अपने अल्प काल में ही इन समाचार पत्रों ने दैनिक आर्थिक, मानसिक प्रताडना भोगते हुये भी समाचारों, लेखों, संपादकीय टिप्पणियों, कहानी, कविताओं, पाठको के पत्रों के माध्यम से रियासती जनता मे राजनीतिक, सामाजिक चेतना लाने का महान कार्य करते हुये अपनी विकास यात्रा को जारी रखा। इन समाचार पत्रों ने प्रत्येक कोने मे हो रहे अत्याचार, शोषण, दमन, भ्रष्टाचार, दुराचार, शासको के अतरंग संबंधों, जीवन के अनाचार राजनीतिक हत्याओं, नागरिको के अधिकारों से जनता को अवगत कराया। वही जनआशाओं – आकांक्षाओं को प्रभावशाली ढंग से उठाया, जन अभाव–अभियोगों को दूर करने का प्रयत्न किया एवं राजपूताना के जनजीवन को प्रतिबिंबित करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया। राजस्थान की बिखरी शक्तियों को एक सूत्र में संगठित कर जनजागृति लाते हुये स्वाभिमान उत्पन्न करने का कार्य किया।

संक्षेप में इन समाचार पत्रों के विकास का इतिहास भारत की स्वाधीनता, स्वराष्ट्रोन्नति और सर्वोदय भावना की प्राप्ति के संघर्ष का इतिहास है। जिसमें समाचार पत्र पूर्ण रूप से सफल रहे और ये स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के वैचारिक यज्ञ की यशोगाथा का प्रमाणिक दस्तावेज (अभिलेख) बन गये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

समाचार पत्र

1. स्वदेश 24 फरवरी 1920 पृ. 5
2. लोाकवाणी अप्रेल 1947 पृ. 53
3. रोजदल तालिम 1 अक्टूबर 1856, 24 सितम्बर 1856 प्रवेशांक 6 अक्टूबर 1856
4. जयपुर गजट 24 मई 1905 पृ. 1, 12 दिसम्बर 1936 पृ.1
5. सज्जन कीर्ति सुधाकर 10 जुलाई 1922 पृ. 1
6. सर्वहित 1 मई 1984 पृ. 1
7. जगहितकारक 3 जनवरी 1863 मुख्य पृ. 46
8. देश हितेषी आषाढ़ संवत 1939 अंक 3 पृ. 11
9. तरूण राजस्थान 5 दिसम्बर 1937 पृ. 3
10. समालोचक नवम्बर 1903 पृ. 1973
11. लोकवाणी 24 फरवरी 1946, 3 मार्च, 17 मार्च 1946, 24 मार्च 1946, 24 अगस्त 1947
12. मारवाडी समाचार 17–31 जनवरी, 3 अप्रेल 1940
13. प्रजासेवक 12 नवम्बर 1940, 1 अप्रेल 1941 पृ. 1
14. तेजप्रताप 2 जनवरी 1938 पृ. 1
15. अलवर पत्रिका 26 अप्रेल 1938 पृ. 1
16. राजस्थान क्षितिज सितम्बर 1948 पृ. अन्तिम
17. स्वतंत्र भारत 12 फरवरी 1947 पृ. 1
18. नवजीवन 4 मई 1940 पृ. 8
19. लोकवाणी अप्रेल 1947 पृ. 55
20. राजस्थान केसरी 4 सितम्बर 1921 पृ. 1, 2 अक्टूबर 1921 पृ. 14
21. नवज्योति अक्टूबर 1921 पृ. 14, 14 अगस्त 1977 पृ. 4
22. प्रताप 26 जनवरी 1920 पृ. 6, 7 मार्च, 6 जुलाई 1920 पृ. 5
23. नवीन राजस्थान 2 जुलाई 1922 पृ. 1, 26 अप्रेल 1932 पृ.1
24. राजस्थान संदेश 4 जनवरी 1932 पृ. 1, 26 अप्रेल 1932 पु.1
25. तरूण राजस्थान 16 अक्टूबर 1927 पृ. 1
26. कर्मवीर 23 सितम्बर 1935 पृ. 1

पुस्तक

27. डॉ. एम. एस. जैन – आधुनिक राजस्थान का इतिहास, नई दिल्ली, 1983
28. चनूविपिन– आधुनिक भारत, अनामिका पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2008
29. चौधरी रामनारायण – राजस्थान का उत्थान, अजमेर, 1967,1974

30. दास राधाकृष्णन्– हिन्दी समाचार पत्रों का इतिहास, कशी, 1894
31. दुबे राजीव– राष्ट्रीय अन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता, इलाहबाद 1988
32. जैन रमेश– भारत के इतिहास में पत्रकारिता, जयपुर, 1989
33. पंकज डॉ. विष्णु– राजस्थान के पत्र और पत्रकार, अजमेर 1967
34. पत्रकार मनोहर– राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता जयपुर 1981
35. प्रभाकर मनोहर– रोल ऑफ राजस्थान प्रेस डयूटिंग फ्रीडम स्ट्रगल, जयपुर 1958
36. डॉ तिवाडी अर्जुन– इतिहास निर्माता पत्रकार, वाराणसी, 200
37. रामशरण पीतलिया– हिन्दी की कीर्तिशेष पत्र–पत्रिकाऍं, जयपुर, 2000
38. ठाकुर गंगा प्रसाद – भारत में प्रेस, कानून और पत्रकारिता, भोपाल 1984
39. राय सुजाता– हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय जनजागरण, दिल्ली 1972
40. दास राधाकृष्णन्– हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास, नई दिल्ली 1874